डॉ. लूका कौन था – परिचय

यह इस श्रृंखला का पहला सन्देश है जिसमें हम स्वास्थ्य के मूल विचार पर ध्यान करेंगे। इसी प्रकार से हम स्वस्थ रह सकते हैं। निश्चित तौर पर जब स्वस्थ रहते है तो न केवल हम अच्छा महसूस करते हैं बल्कि अच्छा और ज्यादा काम भी करते हैं। चाहे हम कितने भी अच्छे और स्वस्थ रहें अंततः हम मरेंगे। चाहे हमारा स्वास्थ्य कितना ही अच्छा क्यों न हो हमें दुःख तो होता है! ये दुःख चाहे शारीरिक या मानसिक हो या एक ही समय में दोनों हो सकते हैं।

यद्यपि बाइबल स्वास्थ्य के विषय में बहुत कुछ कहती हैं। वास्तव में नये नियम के प्रमुख लेखकों में एक लेखक वैद्य था। जिसका ना वैद्य लूका था। यह वैद्य कौन था? लूका एक वैद्य था जो 2000 वर्ष पूर्व आज के इस्राएल देश में रहता था। वह यीशु के पास एकदम बाद आया। यीशु की पृष्ठभूमि यहूदी थी जबकि लूका के वंशज यूनानी मूल के थे। यूनानी भाषा उस समय की परिपक्व एवं विकसित भाषा थी अतः उसने इसी भाषा में लिखा। संभवतः यीशु इब्रानी भाषा बोलता होगा।

वह पलस्तीन (वर्तमान इस्राएल) में रहता था, वह यूनानी था एवं यूनानी भाषा जानता था। लूका का बहुत की महत्वपूर्ण स्थान था, उस समय की स्वास्थ्य सेवा एवं दवाईयों के विषय में पूर्वी एवं पश्चिमी विचारों से वह बहुत परिचित था।

लूका के विषय में बात करने से अच्छा यह रहेगा कि हम स्वास्थ्य सम्बन्धि उसके लेख पर विचार करें कि वह क्या कहता है? यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि लूका स्वास्थ्य के विषय में कितना बताता है, परन्तु महत्वपूर्ण यह हैं कि वह उस व्यक्ति के बारे में कितना बताता है, जो चंगा कर सकता है! यह बहुत ही महत्व की बात है कि व्यक्ति स्वस्थ हो तथा उस डॉक्टर को भी जानें जो उसे स्वस्थ कर सकता है। लूका इस व्यक्ति के बारे में लिखता है। आईयें देखें वैद्य लूका इस व्यक्ति के विषय क्या लिखता है। लूका लिखता है कि, "बहुत से लोगों ने इन बातों को लिखने का कार्य किया, जो हमारे समय में हुई, जो बातें हमें प्रत्यक्ष दशाओं के द्वारा सौंपी गयी, मैंने भी सावधानी पूर्वक खोज की और मुझे यह भाया कि हे, थियुफिलुस तुझे कुछ लिखूँ, जिससे की तू इन बातों की सच्चाई को जान सके, जिसकी शिक्षा तुझे दी गई है। वह लिखता

है उसे अच्छा स्वास्थ्य देने वाले के विषय में खोज की। पहले उसने बहुत गवाहों से बात की ताकि वो इन बात को क्रमानुसार लिख सकें ताकि उसके लिखे हुए पर विश्वास हो ज्यौं का त्यौं है या नहीं, जिनकी उसने शिक्षा पाई है। लूका यहाँ लिख रहा है कि कैसे उसने इस चंगाई देने वाले के विषय सुचनाएँ इकट्ठी की। पहले उसने अच्छे गवाह ढूँढें इसके बाद क्रमानुसार लिखा ताकि वे उसके लेखों की सच्चाई जानें, की क्या वे सच्ची है!"

यह कौन है जिसके बारे में लूका लिखता है कि वह चंगाई दे सकता। आईये उसके विषय वैद्य लूका के लेख को देखें।

लूका लिखता है, यीशु शिमौन के घर गया। यहाँ उसकी सास बुखार से पीड़ित थी, उन्होंने यीशु से सहायता माँगी। यीशु ने झुककर बुखार को डाँटा, और बुखार उतर गया। वह तुरन्त उठकर उनकी सेवा करने लगी। शाम के समय लोग यीशु के पास हर प्रकार की बिमारियों से पीड़ित लोगों की लाते थे, यीशु उन पर हाथ रखकर चंगाई देता था।

उसके लेखों से पता चलता है कि इस व्यक्ति का नाम यीशु था। वह लोगों का ने केवल बुखार से चंगा कर सकता था बल्कि अन्य बिमारियों ये भी। उसके पास लोगों को तुरन्त चंगा करने की सामर्थ्य एक अधिकार था। क्या यह अजीब बात नहीं है? वह यह कैसे कर सकता था? कैसे वह तुरन्त चंगा कर सकता था? कैसे वह बहुत सी बिमारियों को चंगा कर सकता था? क्या उसने विशेष प्रशिक्षण पाया था? क्या उसके पास विशेष सामर्थ्य थी। उसने यह कैसे किया या यह कैसे होता था? क्या उसके पास झूठा दिखावा करने वाले? आइये इसके विषय लूका के दूसरे लेखों को देखा।

लूका लिखता है, "एक दिन जब यीशु लोगों को सिखा रहा था, गलील, यहूदिया एवं यरूशलेम के हर गांव से अगुवे उसके पास आये। परमेश्वर की आत्मा चंगा करने के लिए उसके साथ थी। कुछ लोग एक लकुवे के मारे को चटाई पर डालकर लाये तथा उसे यीशु के सामने की कोशिश करने लगे। जब भीड़ के मारे वह ऐसा न कर सके, वे छत पर जाकर उसे नीचे भीड़ के बीचों–बीच में छोड़ने का प्रयास करने लगे। जब यीशु ने उनका विश्वास देखा, यीशु ने कहा, मित्र तेरे पाप क्षमा हुए।" जब अगुवों ने (जो यीशु को सुनने उस क्षेत्र के गवों से आये थे) यह सुना, वे यीशु क्रोधित हो उठे। यह कौन है जो यह कह रहा है? परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है? यीशु ने यह जानकर कि क्या सोच रहे, उसने कहा, "तुम अपने ह्रदय में यह क्या सोच रहे हों? क्या कहना सही है कि तेरे पाप क्षमा हुए या उठ और चल

फिर? ताकि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा का भी अधिकार है। उसने लकुवे के मारे से कहा, मैं तुझसे कहता हूँ कि अपनी खाट उठा और चल फिर, तुरन्त ही वह खड़ा हुआ और अपना सबकुछ लेकर परमेश्वर की बड़ाई करने लगा। लोग जिन्होंने यह देख था आश्चर्य से भरकर कहने लगे, आज हमने आश्चर्यजनक बात देखी है।

एक और घटना है जिसके विषय में वैघ लूका यीशु के विषय में बताता है। इस घटना से हमें प्रभु यीशु एवं उसके इस संसार में रहने वालों कि चंगाई के विषय में सिखने को मिलता है। कौन सी बात हमें सिखने को मिलती है।

पहली बात, वह बहुत प्रसिद्ध था। उस क्षेत्र एवं आसपास के गावों के लोग उसको सुनने आते थे, साथ ही जिस घर में वह सिखा रहा हैं, लकुवे के मारे हुए के मित्रों से भरा हुआ था (जिसके कारण वे अन्दर भी नहीं)। दुसरी बात, यीशु के पास चंगाई की आत्मा भी थी। उसके पास उसके स्वामी की ओर से चंगा करने की आत्मा थी। उसकी आत्मा परमेश्वर की ओर से थी। तीसरी बात, हम जानते है कि यीशु लोगों को शारीरिक चंगाई देता है! वे कौन सी आत्मिक बिमारी है जिसे यीशु ने इस आदमी के जीवन से ठीक किया। इस बिमारी का नाम है, पाप! या कुछ गलत काम करना या जो कुछ परमेश्वर करना चाहता है उसके विरोध में जाना। यह बड़ी अज़ीब बात है कि यीशु ने केवल शारीरिक बिमारियों को चंगाई नहीं दी बल्कि आत्मिक बिमारियों को चंगा किया। चंगाई बहुत कठिन है क्योंकि डॉक्टर बहुत महंगा हो सकता है, इसमें दुःख भी है और कई बार इलाज काम नहीं करता है! स्पष्ट रूप से यीशु के लिए, पाप क्षमा एवं चंगाई करना कठिन नहीं था। चौथी बात, जो इस कहानी से हम सीखते है, यीशु न केवल हमें बाहर से ही जानता है। परन्तु हमारे दिमाग में क्या चल रहा है, उसे भी जानता है। यदि वह लोगों के विचारों को जानता है तो हमारे विचारों को भी जानता है। पाचवीं बात, यीशु अपने को, मनुष्य था पुत्र कहता है वह यह भी कहता है कि, मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है। इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है कि यीशु का सम्बन्ध परमेश्वर से है। अन्त में, हम लकुवे के मारे को उठकर चलता हुआ देखते है। निश्चित रूप से यह झूठ नहीं है, क्योंकि सब लोग इस आदमी को जानते होंगे, इस तरह यीशु ने बहुतों को चंगा किया।

मित्रों अब तक हमने देखा है कि लूका यीशु के विषय में लिख रहा है, जिसने लोगों की बहुत सी बिमारियों को चंगा किया, यहाँ तक कि लकुवे जैसी भंयकर बिमारी को भी। वह लिखता है कि यीशु ने न केवल लोगों को शारीरिक चंगाई दी बल्कि आत्मिक भी। इस आत्मिक रोग का नाम है पाप, या परमेश्वर द्वारा ठहराए हुए लक्ष्य से चूक जाना।

मित्रों, शारीरिक एवं मानसिक रूप से चंगाई पाना क्यों महत्वपूर्ण है? प्राचीन एवं वर्तमान चिकित्सा दोनों यह मानती है, लोग जो शारीरिक, मानसिक बिमारियों जैसे तनाव, चिन्ता, आदि रोगों से पीड़ित है, वे पाप के कारण इससे पीड़ित है। उदाहरण के तौर पर देखें – लोग, चोरी छल करते एवं झूठ बोलते हैं। इसके बाद उन्हें बुरा लगता है। परन्तु इसके बाद वो माफी माँगकर चुराई हुई चीजों को लौटाते नहीं हैं। जिसके कारण उन्हें बुरा लगता है। जिसमें कई दिन, सप्ताह एवं कई वर्ष लग जाते हैं। यह बुरा लगना ग्लानी में बदल जाता, जिसके कारण तनाव होता है, वह भयंकर थकान का रूप लेकर एक बिमारी बन जाता है। कई डॉक्टर मानते है कि भयंकर तनाव के कारण ह्रदय रोग हो जाते हैं। दूसरा उदाहरण है क्रोध, ऐसे लोगों को रक्त चाप हो जाता है, यदि इसका ईलाज न किया जाये तो इससे दिल का दौरा पड़ जाता है।

मित्रों, यीशु लकुवे के मारे हुए का शारीरिक एवं पाप से पूर्ण चंगाई देता है। बहुत संभव है कि वह लकुवे से तो चंगा हो जाता हो परन्तु शायद दुसरी बिमारियाँ रह जाती है।

मित्रों, इन कहानियों में यीशु की शारीरिक एवं आत्मिक चंगाई की सामर्थ्य को देखते हैं। मान लीजिये की यीशु हमें शारीरिक रूप से तो चंगाई देता है, परन्तु बाद में तो हम शारीरिक समस्या के कारण ही मर जाएँगे? अभी तो हमें आराम मिलेगा, परन्तु इसका क्या कि हम मरेंगे? क्या यीशु का अधिकार केवल बिमारियों पर ही है? परन्तु मृत्यु के बाद क्या? क्या यीशु का अधिकार मृत्यु पर नहीं हैं।

लूका एक जवान के विषय में लिखता है, यीशु नगर के द्वार तक पहुँचा, लोग एक मरे हुए व्यक्ति को बाहर ले जा रहे थे, वह अपनी माता का एकलौता था, और वह विद्यवा थी। एक बड़ी भीड़ उनके साथ थी। जब यीशु ने उसे देखा तो उसे तरस आया, उसने स्त्री से कहा, रो मत, यीशु ने मृत्युशैय्या को छुआ, जो उसे उठाये हुए थे वे चकित हुए। यीशु ने कहा, हे जवान, मैं तुझसे कहता हूँ कि उठ जा, जवान उठकर बैठ गया और बातें करने लगा, यीशु ने उसे उसकी माँ को दे दिया।

इस एक और कहानी में हमें यीशु के तरस एवं मृत्यु पर अधिकार का पता चलता है। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते है, जो शारीरिक, आत्मिक बिमारी को चंगा करने एवं मृत्यु से जिला सकता है! नहीं ऐसा दूसरा महापुरूष, भविष्यद्वक्ता या शिक्षक पैदा नहीं हुआ है। अतः हियाव रखें, दुबारा जब आप बिमार पड़े, या पाप करें तो यीशु को मदद् के लिए पुकारे वो हमें चंगाई देगा।

लूका यीशु के विषय में अन्य बातें लिखता है, जो हमें बाइबल में बताती है। एक महत्वपूर्ण कहानी जो लूका लिखता है वह हमें बताती है कि यीशु न केवल चंगा करता है बल्कि, मरे हुओं को जिलाता है। वह स्वयं मनुष्य के पापों के लिए मरा। उसने हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया ताकि हम परमेश्वर के सम्मुख खड़े हो सकें। ऐसा क्यों है? जब, चोरी, बेईमानी या हत्या करने के द्वारा हमारा सम्बन्ध परमेश्वर से टूट जाता है, हम पर एक कर्ज चढ़ जाता है, जिसे हमें चुकाना है। परन्तु हम परमेश्वर को कैसे कर्ज चुका सकते हैं। हम नहीं कर सकते परन्तु यीशु ने कर्ज चुकाया। वह हमें हमारे पापों के क्षमा करने के लिए क्रूस पर मरा। इतना नहीं वह जी उठा, इस बात को दिखाने के लिए कि उसका, शारीरिक बिमारियों, पाप की सामर्थ्य जो मृत्यु है उस पर भी अधिकार है। यीशु कहता है कि यदि हम विश्वास करें कि वह हमारे पापों के लिए मरा, "तो हम अनंतकाल तक जीवित रहेंगे। चाहे हम मर भी जाये, वो हमें जिलायेगा ताकि हम अनंतकाल तक उसके साथ रहे। क्या आप चाहते है कि यीशु आपकी शारीरिक समस्याओं के साथ आपके पापों को दूर करें, इसके लिए आप यीशु को पुकारे, वह आपकी सुनेगा।

आप मेरे साथ यह प्रार्थना कर सकते है :

"प्रिय यीशु, मैंने पाप किया है। मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ और आप उसके पुत्र हैं। यीशु मैं विश्वास करता हूँ कि आप पृथ्वी पर क्रूस पर मेरे लिए प्राण देने आए ताकि मैं बच जाऊँ। मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मुर्दों में से जी उठे और आज भी जीवित है। मैं यीशु में इस जीवन को अनुभव करना चाहता हूँ।"

मित्रों, सदि आने यह प्रार्थना की है जो आप परमेश्वर की सन्तान बन गयें है और अनंत जीवन आपका है।

मैं चाहूँगा कि आप बाइबल में लूका के लेख यीशु की शारीरिक, आत्मिक चंगाई के विषय में पढ़ें।

प्रभु यीशु आप सबको आशीष दें।